अन्नपूर्णा योजना
7 जन्मदिन | वैवाहिक वर्षगाँठ | पूर्वज-वार्षिकी
आइये! आज के दिन को यादगार बनायें...
प्यार, प्रसन्नता, और प्रसाद बांटकर पुण्य प्राप्त करें।

धर्मदूत

'धर्म एवं सामाजिक जागृति का अनुपम मासिक पत्र'

प्रकाशन तिथि : 09 जुलाई, 2026
The Registrar of News Papers for India
R.N.I. DELHIN/2001/03044 Regd.
Title Code : DELHIN09770

प्रेषक : विश्व जागृति मिशन, ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, 'जी' ब्लाक, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली-110015

जुलाई, 2026 | आषाढ़/श्रावण | सं. 2083 | अंक 300 | मूल्य एक प्रति 5.00 रु. | वार्षिक 50.00 रु. | पृष्ठ 8

प्रतिष्ठा में,

1 अध्यात्म | 2 सम्पादकीय | 3 अम्बर की पाती | 4 समाचार दर्शन | 5 गुरु घर से पाती | 6 धर्मादा | 7 अध्यात्म | 8 समाचार दर्शन

शिष्य के जीवन में ज्योतिर्मय नवप्रभात है गुरु

अमावस की रात में जैसे एकाएक पूर्णिमा का चांद उग आए ऐसे ही हमारे अंधियारे मन को, अंत:करण को, ज्ञान भक्ति और तत्वज्ञान के विवेक के ज्योतिर्मय स्वरूप से युक्त करने का कार्य, हमें प्रकाशित करने का कार्य तथा हमारे अंतर में एक नए प्रभात को जगा देने का का कार्य 'सद्गुरु' के माध्यम से होता है।

इसलिए कोई भी व्यक्ति क्यों न हो, चाहे वह धनी हो या निर्धन, बलवान है या निर्बल, सांसारिक दृष्टि से वह ज्ञानी है या अज्ञानी, मूर्ख हो या विद्वान कोई भी हो, कैसा भी हो, व्यवसायी हो, या कोई छात्र धर्म का पालन करें वाला, कोई सेवा करने वाला, कोई शिक्षक हो, ब्राह्मण वृति वाला कोई व्यक्ति हो या कोई मेहनतकश जो अपनी परिश्रम की श्रमबून्दों को बहाकर कार्य करने वाला व्यक्ति हो, गुरु सबके जीवन की एक

परम आवश्यकता है। फूल खिलाने वाला कोई श्रमिक ही क्यों न हो कोई भी हो क्योंकि आवश्यकता केवल पेट भरने और तन ढांकने के साधारण कार्यों की तरह से नहीं हैं, आवश्यकता है कि हमारे अंदर की कायरता को कोई तोड़ दे और अंदर की भीरुता को मिटा करके भीतर वीरता का संचार कर दे, जिससे आप कर्मवीर या शूरवीर हो सकें, जो व्यक्ति के अंदर निराशा-हताशा की राख को हटाकर आशा-उत्साह की अग्नि जलाता है। उस शक्ति का नाम है सद्गुरु।

जैसे हम अपने आपको भूले हुए हैं और अपने आपको हम जान नहीं पा रहे हों कि जीवन का अर्थ क्या है? जिस तरह से कोई भी चीज ऊपर की तरफ फेंकी जाए तो धरती का आकर्षण शक्ति ग्रेविटेशन का सिद्धान्त अपना कार्य करता है। ऊपर गई हुई चीज को नीचे खींच लेता है। ऐसे ही किसी इंसान को ऊपर जाते हुए, उन्नति के शिखर की तरफ चलते हुए को माया भी इसी प्रकार से नीचे की तरफ खींचती है। माया आलस्य देती है, प्रमाद देती है। इसलिए माया आएगी तो अहंकार देती है। एकदम करीब पहुंचकर भी आप वहां से वापिस चले आओगे। माया उस चीज के सामने लाकर खड़ा कर देती है कि आप बिल्कुल उसके द्वार पर पहुंच चुके हैं आपके लिए द्वार खोल दिया जाता लेकिन वहीं जाकर हमारी श्रद्धा का दीया बुझ गया। हम पथ ढूंढ़ नहीं पाए, दूर तक आगे जा नहीं पाए, जब तक माया न जाने किस रूप में आ जाती है।

माया को तोड़कर मायापति से मिलने के लिए जो राह दिखाता है, वह पथ प्रदर्शक है गुरु। जब व्यक्ति के जीवन में गुरु का प्रवेश हो जाता है और गुरु के दिये हुए मंत्र को शिष्य श्रद्धापूर्वक नियम से जपने लगता है तो उसका जीवन ज्योतिर्मय हो जाता है। हताशा, निराशा के क्षणों में भी उसे आशा, उत्साह का प्रकाश मिलने लगता है। गुरु के मार्गदर्शन में उसका जीवन कुन्दन बन जाता है। ●

आनन्दधाम आश्रम में महागुरुपूर्णिमा महोत्सव

ब्रह्मानुभूति के इच्छुक भक्तों को सद्ज्ञान तत्वज्ञान प्राप्ति हेतु
एक पावन अवसर है यह पूर्णिमा और सद्गुरु का दिव्य सत्संग
ज्ञान भी, ध्यान भी, शक्तिपात भी, देवदर्शन भी, गुरुपूजन का मूल्यवान अवसर भी है इस पूर्णिमा महोत्सव में।

पूज्य सद्गुरु युगऋषि लोकविख्यात संत आचार्य सुधांशु जी महाराज एवं
शिवयोगिनी ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी के
पावन सान्निध्य में

गुरु पूर्णिमा महोत्सव कार्यक्रम

25 जुलाई - सायं 5 बजे से सत्संग
26 जुलाई - प्रातः 8 से 10 बजे तक गुरुमंत्र सिद्धि साधना
सायं 5 बजे से सत्संग
27 जुलाई - प्रातः 8 से 10 बजे तक गुरुमंत्र सिद्धि साधना
सायं 5 बजे से सत्संग
28 जुलाई - प्रातः 8 बजे से गुरु मंत्रदीक्षा
प्रातः 9 बजे से दिव्य शक्तिपात क्रिया
सायं 5 बजे से सत्संग

29 जुलाई, 2026
मुख्य गुरुपूर्णिमा महोत्सव
प्रातः 8 बजे से गुरुदर्शन, पादपूजन एवं विशेष आशीर्वचन

आनन्दधाम आश्रम,
बक्करवाला मार्ग,
नई दिल्ली-110041

आयोजक: विश्व जागृति मिशन, भारत
www.vishwajagritimission.org

ऑनलाईन / ऑफलाईन गुरु मंत्र सिद्धि साधना के लिए सम्पर्क करें
(+91) 9312284390, 8826891953, 9589938938

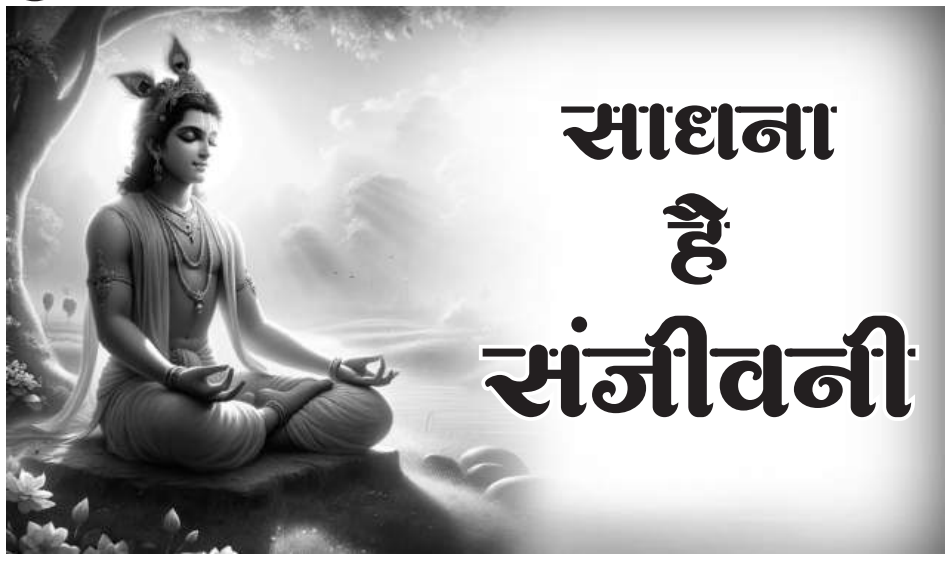

साधना है संजीवनी

ध्यान साधना मानव जीवन के लिए एक प्रयोग औषधि है, संजीवनी है। चंचल भटकते मन को एकाग्र और संतुलित स्थिति में लाना साधना है। ध्यान का मूल अर्थ है, मन को उस स्थिति तक पहुंचाना, जहां वह निरंतर भटकाव से मुक्त होकर पूर्णतः वर्तमान में स्थित हो जाये। यह न तो केवल विचारों को रोकने का प्रयास है और न ही किसी विशेष अनुभव को प्राप्त करने की आकांक्षा, बल्कि यह एक सजग अवलोकन है, जिस में व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं और संवेदनाओं को बिना किसी प्रतिक्रिया के देखता है।

ध्यान साधना की इस सम्पूर्ण प्रक्रिया के लौकिक और पारलौकिक लाभ हैं। लौकिक दृष्टि से जब मन स्थिर और शांत होता है, तो जीवन प्रत्येक क्षेत्र में सफलताएं शीघ्र और आसानी से मिल जाती है। पारलौकिक दृष्टि से साधना से मन को नियंत्रण में करके, इन्द्रियनिग्रह करके शरीर के अंदर विराजमान आत्मा से साक्षात्कार किया जा सकता है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है ''जिसका मन भली भान्ति शांत है, जो पाप से रहित है और जिसका रजोगुण शांत हो गया है, ऐसे इस सच्चिदानन्द आनंदधन ब्रह्म के साथ एकीभाव हुए योगी को उत्तम आनंद प्राप्त होना है।

मानव कल्याण के लिए प्राचीन काल से ही ऋषियों मुनियों ने ध्यान को उत्तम साधना बताया है। इसीलिए गुरुकुलों में उस काल में राजाओं, सामान्यजनों के बालकों को ध्यान साधना का अभ्यास करवा के उन्हें इस विद्या में निष्णात किया जाता था। उस समय भारत में लाखों गुरुकुल थे। सद्गुरुदेव जी महाराज ने मिशन की स्थापना से पूर्व ही भक्तों को ध्यान-साधना का अभ्यास करवाना प्रारम्भ कर दिया था। वर्तमान में तो ध्यान-साधना मिशन के प्रत्येक सत्संग का अनिवार्य अंग है। ध्यान-साधना के विशेष शिविर आयोजित किये जाते हैं, आनंदधाम आश्रम में भारत के तीर्थों में, वर्ष 2026 में इस का आयोजन काशी में किया जा रहा है। मनाली आश्रम में पिछले 24 वर्षों से प्रत्येक वर्ष मई-जून महीनों में साधना शिविर लगाये जा रहे हैं। गुरुदेव जी अपने शिष्यों को ध्यान की विशेष क्रियाएं करवाते हैं और अब इस पुण्य कार्य में डॉ. अर्चिका दीदी भी बहुत सहयोग कर रही हैं। दोंनों पुण्य आत्माओं को प्रणाम।

-डॉ. नरेन्द्र मदान

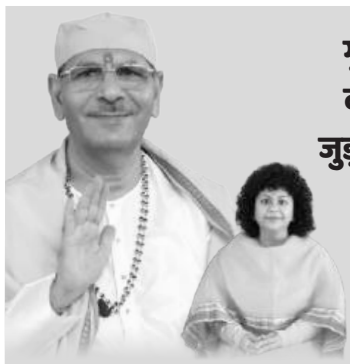

गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी के विचार सुनने व विश्व जागृति मिशन से जुड़ने और दूसरों को जोड़ने के लिए सोशल मीडिया के निम्नलिखित प्लेटफार्म पर सम्पर्क करें-

TO CONTACT US : LOG-IN

VISHWA JAGRITI MISSION
Facebook Youtube Instagram X Linked In Whatsapp

HIS HOLINESS SUDHANSHU JI MAHARAJ
Facebook Youtube Instagram X Koo Linked In Speaking Tree

DR. ARCHIKA DIDI JI
Facebook Youtube Instagram X Koo Linked In Speaking Tree

Jaago Sudhanshu ji Maharaj

DD NATIONAL
दूरदर्शन पर देखिये गीता ज्ञान अमृतम्
प्रतिदिन
प्रातः 7:30 से
Tata Sky - 197
Airtel - 153
Dish TV - 113
Tata Play - 114 in SD
Jio TV, Watcho and Waves OTT

संस्कार
सोमवार से शुक्रवार
प्रतिदिन प्रातः 7:45 से 8:05 तक

Phone +91 99999 04747
www.sudhanshujimaharaj.net
www.vishwajagritimission.org
www.drarchikadidi.com
info@sudhanshujimaharaj.net
info@vishwajagritimission.org

गुरु कृपा से भाग्य बनता है सौभाग्य

जब गुरु की कृपा होती है तो व्यक्ति भगवान की भक्ति करने लगता है, उनसे जुड़ने लगता है। भगवान से जुड़ने से भाग्य सौभाग्य बनता है। तब आपको माया का दास नहीं बनना पड़ता अपितु माया आपका सत्कार करने के लिए आयेगी और आपकी दासी बन जायेगी। अगर आपके साथ मायापति भगवान हैं तो संसार की सारी चीजें आपके वश में होंगी। भाग्य काल, माया सब भगवान के आधीन है, लेकिन भगवान से जुड़ने के लिए भाग्य को सौभाग्य बनाने के लिए सगुरा (गुरुवाला) होना बहुत जरूरी है। आपके जीवन में गुरु हैं, गुरु की कृपा है तो फिर कोई बंधन आपको बांध न सकेगा और आप अमृत पथ के पथिक बन जाएंगे। ●

सद्गुरुदेव उवाच

थोड़े में रह जाओ परन्तु आनंद और शांति के साथ रहो। तनाव में आजकल लोग पागलपन के शिकार हो रहे हैं और इसके लिए जरूरी है कि सबसे पहले हमारे बारे में लोग क्या कह रहे हैं इसकी परवाह करना छोड़ें। प्राणों में बल भरें। मन को शांत रखें। बुद्धिमान और ज्ञानवान बनें। जिंदगी नई तब होती है जब सोच नई होती है। जब हम नया सीखते हैं नया पढ़ते हैं तो मस्तिष्क भी नया हो जाता है।

जीवन में नियमों का पालन आवश्यक है। हर रोज सुबह व शाम को भगवान से जुड़ने का प्रयास करें। जुड़ने से तात्पर्य पूजा, साधना, माला फेरना आदि से है। इसे नियम से करें। व्यक्ति कोई भी नियम को तोड़ता है तो उसका फल मिलना बंद हो जाता है। कर्म हमारा पीछा नहीं छोड़ता है। हमें कर्म करते रहना चाहिए। गुरु कवच के रूप में हमारी रक्षा करता है। सेवा करने से हाथों में लिखी तकदीर की लकीरें बदल जाती हैं। अगर व्यक्ति किसी समस्या से उबर जाता है तो सबसे पहले उसका कर्म होता है कि वह उस ताकत को सलाम करे जिसने उसे इस समस्या से उभरने में सहायता दी। उसका एहसान मानें। गुरु की कृपा प्राप्त शिष्य ही नियमों पर खरे उतरते हैं। ●

पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित
भक्ति सत्संग के आगामी कार्यक्रम, 2026

19 जुलाई	- सिद्धिधाम आश्रम, कानपुर (उ.प्र.)
	सायं 4.30 बजे से - गुरुदर्शन, पादपूजन एवं गुरुपूर्णिमा सत्संग
29 जुलाई	- मुख्य गुरुपूर्णिमा महोत्सव
	आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
	प्रातः 8 बजे से - गुरुदर्शन, पादपूजन एवं गुरुपूर्णिमा सत्संग
02 अगस्त	- मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश
	महर्षि वेदव्यास अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल विद्यापीठ का शुभारम्भ
04 अगस्त	- युवा अभ्युदय, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
07 से 09 अगस्त	- बंगलुरु, कर्नाटक
15 अगस्त	- स्वतंत्रता दिवस, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
21 से 23 अगस्त	- ब्रैंपटन, कनाडा
28 अगस्त	- रक्षाबंधन एवं पूर्णिमा दर्शन,
	ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, नई दिल्ली
04 सितम्बर	- श्री कृष्ण जन्माष्टमी, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
18 से 20 सितम्बर	- मनीला, फिलीपिंस
21 से 23 सितम्बर	- हांगकांग
26 सितम्बर	- पूर्णिमा दर्शन, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
02 अक्टूबर	- श्रद्धापर्व, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
07 से 10 अक्टूबर	- बरेली, उत्तर प्रदेश
23 से 26 अक्टूबर	- श्री गणेश लक्ष्मी महायज्ञ
	आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
26 अक्टूबर	- पूर्णिमा दर्शन, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
11 नवम्बर	- भैयादूज, ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, नई दिल्ली
24 नवम्बर	- कार्तिक पूर्णिमा दर्शन, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
10 से 13 दिसम्बर	- शिव ध्यान योग शिविर, वाराणसी, उत्तर प्रदेश
23 दिसम्बर	- पूर्णिमा दर्शन, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली

आयोजक : विश्व जागृति मिशन

प्रिय आत्मन्!

भगवान ने मनुष्य को यह अमूल्य जीवन दिया, लेकिन इस तरह से दिया, जिस तरह से किसी आदमी को संगीत का साज मिल जाये लेकिन उसे बजाना ही न आये तो वह साज बेसुरा स्वर छेड़कर शोर मचाने लगता है। इसी तरह से परमात्मा के दिये हुए इस शरीर रूपी साज से मधुर संगीत कैसे निकाला जाय? इस कला को सिर्फ सद्गुरु ही देता है। सद्गुरु जीने का ढंग और अंदाज देता है जिससे यह शरीर रूपी साज मधुरता से भर जाता है। जब शिष्य के जीवन में सद्गुरु की शिक्षाओं का प्रवेश हो जाता है तो उसके जीवन में धन्यता आ जाती है। वह शिकायती नहीं रह जाता, धन्यवादी बन जाता है। वह जीवन में प्राप्त हर एक चीज के लिए हृदय से धन्यवाद करने लगता है, कृतज्ञ हो जाता है। उसका दिल कह उठता है कि प्रभु तूने जो मेरा परिवार दिया है, उसके लिए आभारी हूं, जो मित्र, बन्धु, रिश्तेदार दिये उसके प्रति धन्यवादी हूं। तेरी हर एक देन के लिए शुक्रगुजार हूं। शुकराना भाव से शिष्य के हृदय में गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा, अटूट निष्ठा, भक्तिपूर्ण समर्पण हो जाये तो फिर जीवन में चमत्कार घटने शुरू हो जाते हैं। गुरु के प्रति श्रद्धा, निष्ठा, सेवा, समर्पण और कृतज्ञता के भाव प्रकट कर अपने जीवन को धन्य करने का महापर्व है गुरुपूर्णिमा। गुरुपूर्णिमा पर गुरु चरणों में हाजिरी लग जाने से शिष्य का लोक भी सुधरता है और परलोक भी संवरता है।

गुरुपूर्णिमा पर्व पर सभी प्यारे शिष्यों को बहुत-बहुत आशीर्वाद, शुभ मंगल कामनाएं।

–आचार्य सुधांशु

शिष्य को बिंदु से सिंधु बना देता है- गुरुमंत्र

एक सिद्ध गुरु द्वारा सिद्ध किये गये मंत्र को कृपापूर्वक श्रद्धालु शिष्य को बीज रूप में देना मंत्र दीक्षा है। दीक्षा में दिया गया मंत्र एक बीज की तरह होता है जो शिष्य की श्रद्धा-विश्वास, लगन, ध्यान और जप से प्रस्फुटित होकर बीज से वृक्ष का रूप लेकर कल्याणकारी बनता है। एक छोटे से शब्द मंत्र में बिन्दु से सिन्धु बनने की क्षमता होती है गुरु के शब्द, गुरु द्वारा दिया गया पवित्र मंत्र शिष्य के लिए कवच बन जाता है। यह शिष्य के शरीर और मन के चारों ओर दिव्य शक्ति से उसे सुरक्षित रखता है। मंत्र दीक्षा शिष्य की चेतना को उच्च चेतना की और ले जाने वाला आध्यात्मिक चरण है। गुरु के अनुग्रह से, कृपा से या प्राणिक ऊर्जा के माध्यम या गुरु द्वारा दिये गये गुरुमंत्र के माध्यम से शिष्य अपने आत्मा में बैठे परमात्मा का साक्षात्कार कर सकता है। ज्ञान तो आप विद्यालयों में पुस्तकों से या अन्य माध्यमों से भी प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन मंत्रदीक्षा का दृष्टिकोण वैज्ञानिक है। इसमें क्रिया, साधना और उपासना तीनों ऊर्जा मंत्र गुरु है। शिष्य के आत्मिक मिलन का पवित्र रिश्ता है। यह एक ऐसा रिश्ता है जो सभी रिश्तों से आगे बढ़कर शिष्य को आत्म परिचय से परमात्म मिलन की राह दिखाकर लोक और परलोक दोनों सुधार देता है। गुरु मंत्र जाप और गुरु कृपा से ही शिष्य गगन मंडल (सहस्त्रार चक्र) के उल्टे कुएं का अमृत जल का पान कर पाता है कहा जाता है कि-

गगन मंडल में ऊंधा कुआं, वहां अमृत का बासा।
सगुरा होई सो भरि भरि पीवै, निगुरा जाई पियासा।।

अर्थात् इस संसार सागर में गुरु बाला व्यक्ति ही अमृत कुएं के जल का पान कर पाता है। बिना गुरु वाला प्यासा ही रह जाता है। ●

'शिव वरदान तीर्थ क्षेत्र' में
प्रतिदिन सायं 6:00 बजे से
LIVE संकीर्तन, भजन,
हनुमान चालीसा पाठ, यज्ञ एवं आरती
घर बैठे ऑनलाइन यजमान बनें
YUGRISHI POOJA EVAM ANUSHTHAN KENDRA
YouTube | facebook
सायंकालीन यज्ञ में आप संकल्पित यजमान बनकर घर बैठे आश्रम के आचार्यों के निर्देशन में पूजन-हवन कर पुण्यलाभ प्राप्त करें।
आप इस आरती में यजमान स्वरूप शामिल होने के लिए सादर आमंत्रित हैं।

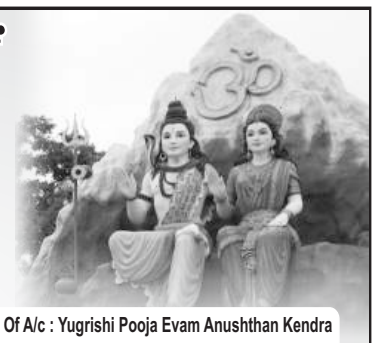

यज्ञ सहयोग राशि	आरती सहयोग राशि	यज्ञ एवं आरती सहयोग राशि
600/-	500/-	1100/-

Name Of A/c : Yugrishi Pooja Evam Anushthan Kendra
Bank Name : Axis Bank Ltd.
Branch :A-11,Vishal Enclave, Opp.'Rajauri Garden, Delhi-110027
A/c No. : 920010059919696 IFSC Code : UTIB 0000066

www.vishwajagritimission.org
आनंदधाम आश्रम, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-110041

आयोजक : युगऋषि पूजा एवं अनुष्ठान केन्द्र सम्पर्क : +91 9560792792, 8826891955, 7291986653,9599695505

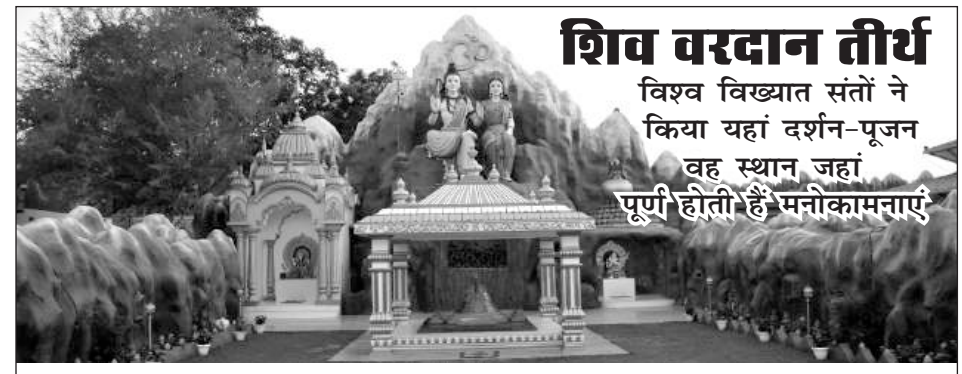

शिव वरदान तीर्थ

विश्व विख्यात संतों ने किया यहां दर्शन-पूजन वह स्थान जहां पूर्ण होती हैं मनोकामनाएं

आनन्दधाम आश्रम की ओंकार पर्वत की गुफा में 12 ज्योतिर्लिंगों में विद्यमान शिव की दिव्य उर्जा कष्ट हरण करती है। इन ज्योतिर्लिंगों के दर्शन पूजन और रुद्राभिषेक से हजारों भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण हुई हैं। देश-विदेश के भक्त यहाँ मनौती पूर्ण करने आते हैं। भारत के महान संतों ने भी यहाँ आकर दर्शन पूजन किया है और कृपा प्राप्त कर आनन्दित हुए हैं। पूज्य जगद्गुरु स्वामी राजराजेश्वराश्रम जी महाराज (हरिद्वार), विश्व प्रसिद्ध राम कथा वाचक पूज्य मोरारी बापू जी, चमत्कारी विद्या के धनी सनातन गौरव बागेश्वर सरकार पूज्य पंडित धीरेन्द्र शास्त्री जी तथा भारत भर के सैकड़ों साधु संन्यासी, संत एवं भक्तजन यहाँ की दिव्य ऊर्जा से लाभान्वित हुए।

शिव वरदान तीर्थ स्थित द्वादश ज्योतिर्लिंगों में **घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग** का विशेष महत्व है। शिवपुराण के अनुसार शिवभक्तिमती घुश्मा के ईश्वर के नाम से इस ज्योतिर्लिंग का घुश्मेश्वर नाम पड़ा। घुश्मा भगवान शिव के चरणों में अगाध श्रद्धा रखने वाली एक ऐसी भक्त महिला थी जिसने अपने पुत्र की हत्या किये जाने पर भी शिव भक्ति से अपने पुत्र को जीवित कर लिया और उसके प्रति ईर्ष्या भाव भी नहीं रखा, क्षमा कर दिया जिसने घुश्मा के पुत्र की हत्या की। इस ज्योतिर्लिंग का सबसे बड़ा महत्व भक्ति की दृढ़ता में निहित है। सामान्यत: मनुष्य सुख में ईश्वर को याद करता है और दु:ख में विश्वास खो देता है, परंतु घुश्मा ने अपने जीवन की सबसे बड़ी विपत्ति में भी भगवान शिव का स्मरण नहीं छोड़ा। जब उसके पुत्र की हत्या कर दी गई, तब भी उसने विलाप करने के बजाय शिव-पूजन को प्राथमिकता दी। यह ज्योतिर्लिंग, क्षमा, उदारता और दृढ़ भक्ति का प्रतीक है। शिव वरदान तीर्थ स्थित घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन, पूजन और रूद्राभिषेक से मनुष्य के पापों का क्षय होता है तथा उसे मानसिक शांति प्राप्त होती है। संतान सुख की कामना करने वाले माता-पिता विशेष श्रद्धा से घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग की पूजा करने आते हैं। यहां दर्शन-पूजन से भक्तों की पारिवारिक समस्याओं का समाधान होता है तथा उनके जीवन में सुख-समृद्धि आती है।

महाराजश्री के मुखारविन्द से

- जीवन छोटा है, समय अति अल्प है। जीवन का कर्मक्षेत्र बड़ा है और कर्तव्य-कर्म बहुत करने बाकी हैं। अत: समय की पूंजी को सोच-समझ कर प्रयोग करना चाहिए।
- भगवान को, भगवान की वस्तुओं से अधिक महत्व दो। भगवान को भूलकर भगवान की वस्तुओं के पीछे मत दौड़ो। संसार का कोई भी आकर्षण इतना महत्वपूर्ण नहीं है कि पूजा-भक्ति का समय उसके लिए दिया जा सके।
- डॉक्टर और यमराज के बंधन से बचने के लिए आधा घंटा स्वास्थ्य और आधा घंटा भक्ति के लिए समय अवश्य दो।
- प्रसन्न रहना, संतुष्ट रहना, शांत रहना, उत्साहित रहना, जीवन उत्सव के रंग हैं। इसलिए हर पल को जी भरकर जीओ, हर दिन महोत्सव है।

अन्तर्राष्ट्रीय ध्यान केन्द्र साधनाधाम आश्रम, मनाली में सम्पन्न हुआ चान्द्रायण तप एवं साधना शिविर

तप साधना से आनंद की अनुभूति ही नहीं अपितु सम्पूर्ण व्यक्तित्व बनता है आकर्षक -सुधांशु जी महाराज

मनाली। मानव जीवन एक स्वर्णिम अवसर है, इसके गौरव को पहचान कर जीवन को मूल्यवान बनाने के लिए हर क्षण स्वयं के निर्माण की दृष्टि रखनी चाहिए। जीवन को कीमती बनाने का एक मात्र रास्ता है साधना। इससे केवल चेहरे पर प्रसन्नता, शरीर में उत्साह एवं आनंद की अनुभूति ही नहीं मिलती, अपितु सम्पूर्ण व्यक्तित्व आकर्षक बन जाता है। आत्म ऊर्जा की आध्यात्मिक अनुभूति करते हुए नव रुपांतरण ही हमारी इस साधना का लक्ष्य है।

मानसिक तनाव को बाहर निकालकर जप, तप, ध्यान, योग आदि साधनायें जब की जाती हैं, तो आत्मिक शक्ति जगती है। इस अभ्यास से जीवन में बैलेंस बनता है। साधक भावनात्मक रूप से सबल होता है। भावनापूर्वक प्रभु का स्मरण करते हुए किये जाने वाले कठोर तप एवं साधना से जन्म जन्मांतरों के प्रारब्ध से मुक्ति प्राप्त किया जा सकता है। उपरोक्त उद्बोधन पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज ने मनाली में आयोजित ध्यान-साधना शिविर में साधकों को सम्बोधित करते हुए दिए।

उल्लेखनीय है कि 12 मई से 10 जून, 2026 तक देवभूमि हिमाचल प्रदेश के मनाली (घुड़दौड़) स्थित "साधना धाम आश्रम" में एक महीने तक चलने वाला 'मनाली चन्द्रायण तप एवं ध्यान साधना शिविर' का समापन हुआ। पूज्य सदगुरु श्री सुधांशु जी महाराज, पूज्या गुरु माँ एवं ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी जी के सान्निध्य एवं मार्गदर्शन में एक माह की अवधि में पांच-पांच दिवसीय दो ध्यान साधना शिविर, 30 दिवस का एक पूर्ण चन्द्रायण एवं 15 दिवसीय एक "अर्ध चन्द्रायण तप साधना शिविर" सम्पन्न हुए। इसमें सहभागी बनकर साधकों ने ईश्वरीय चेतना की अनुभूति पाई। इस अवसर पर भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी सपरिवार मनाली साधना धाम आश्रम पधारे और प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र का लोकार्पण किया। शिविर के दौरान अनेक प्रतिष्ठित हस्तियों ने भी साधनाधाम आश्रम पधारकर गुरुवर से आशीर्वाद प्राप्त किया।

इस दौरान पूज्य महाराजश्री ने शिविर के उद्देश्यों को दृष्टि में रखकर भिन्न-भिन्न साधनात्मक प्रयोगों से भक्तों को जोड़ा। जिसमें चाण्द्रायण तप के प्रयोग विशेष थे, इसमें आहार आधारित साधना पर जोर दिया गया। इसके अतिरिक्त साधकों को आत्म

हिमाचल प्रदेश भाजपा प्रभारी श्री श्रीकांत शर्मा जी

हिमाचल प्रदेश के पूर्व मंत्री श्री गोविन्द ठाकुर जी

स्वरूप जागरण ध्यान, धन्यवादी भाव का ध्यान, डिवाइन ब्लिस ध्यान, ओंकार ध्यान, षड्चक्र ध्यान, कुंडलिनी जागरण की एडवांस विधि आदि साधनाओं के अभ्यास कराये गये। पूज्य महाराजश्री द्वारा साधकों को साधना की गहराई में उतारने से पूर्व कराये जाने वाले क्षमा मेडिटेशन की अनुभूतियां विशेष रहीं, जिसे गुरुवर के निर्देशन में करके साधकगण भावविभोर होते देखे गये। इसी के साथ भ्रामरी, नाड़ीशोधन, उज्जायी, शिथिलीकरण, कपालभाति, अग्निसार जैसे प्राणायामों का भी नियमित अभ्यास साधकों को कराया जाता रहा।

साधना धाम आश्रम के यज्ञीय वातावरण में चल रहे साधना शिविर के दौरान भक्तों के कल्याण एवं सुख-शांति, समृद्धि हेतु कुल्लू जिले के नग्गर गाँव में स्थित ऐतिहासिक त्रिपुर सुंदरी मंदिर में गुरु परिवार ने दर्शन एवं पूजन किया।

मनाली के सभी साधना शिविरों में सहभागिता के लिए भारत के अतिरिक्त अमेरिका, आस्ट्रेलिया, स्पेन, दुबई, हांगकांग आदि देशों से भी साधक मनाली पधारे साधकों ने गुरुवर एवं डॉ. अर्चिका दीदी के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में देव शक्तियों को आकर्षित करने में समर्थ अनेक ध्यान साधना विधियों को सीखते हुए ब्लिस मेडिटेशन की अन्तर्यात्रा करते हुए अनोखे आनंद का अनुभव किया।

साधनाधाम आश्रम मनाली पधारे साधकों का गुरुकुल के ऋषिकुमारों ने तिलक, कलावा बांधकर मंगलगान सहित स्वागत अभिनन्दन किया। पूज्य गुरुदेव ने सभी को मंगल आशीष प्रदान किया। साथ ही 'मिशन प्रबंधन मण्डल' की ओर से सभी को उपवस्त्र भेंट करके शिविर के अनुशासन-अनुबंध एवं दिनचर्या से भी परिचित कराया गया। इसी क्रम में डॉ. अर्चिका दीदी के नेतृत्व में सात नदियों से लाये गये जल से साधकों का अभिसिंचन किया गया। तत्पश्चात पीत वस्त्रों में भक्तों ने एक विराट दिव्य मंगल यात्रा का विधिवत आनन्द लिया। विश्व जागृति मिशन की उपाध्यक्षा डॉ.अर्चिका दीदी जी के सान्निध्य में साधकों ने विघ्नहर्ता भगवान गणपति का पूजन भी किया। सम्पूर्ण अभियान को सफल बनाने में मिशन के महामंत्री श्री देवराज कटारीया जी के नेतृत्व में तैयार टीम रात-दिन सेवा में लगी रही।

साधना शिविर में ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी ने साधकों को देव शक्तियों की अनुभूति कराते हुए उन्हें "अशांति से शांति" की यात्रा से जोड़ा। उन्होंने कहा मानसिक रूप से संतुलित और अनुशासित जीवन जीते हुए नियम के साथ चलने वाले कभी निराश नहीं होते। दीदी ने नकारात्मक विचारों से बचे रहने और सकारात्मक विचारों को आत्मसात करने हेतु सभी को प्रेरित किया। उन्होंने कहा निर्मल मन में ही शांति, सकारात्मकता और आत्मिक आनंद का संचार होता है।

डॉ. दीदी ने बताया कि आज्ञा चक्र चेतना केन्द्र का मुख्य द्वार है, इसे जागृत करने से भगवान शिव की कृपा बरसती है, यहीं से भाग्य बदलता है। अतः अपने आज्ञा चक्र को जगाकर परमात्मा के प्रति प्रेम, शान्ति और स्थिर भाव सहज पाया जा सकता है। आप अपने समय की कीमत समझें और देवताओं के प्रतिनिधि बनकर जीवन जिएं। सेवा, साधना और सकारात्मक सोच को जीवन में अपनाकर अपने जीवन का रूपांतरण करें।

योग गुरु स्वामी लाल जी महाराज एवं गुरु माँ श्रीमती प्रभा जी पधारे मनाली साधना धाम आश्रम

मनाली के साधना धाम आश्रम परिसर में पूज्य योग गुरु स्वामी लाल जी महाराज अपनी सहधर्मिणी गुरु माँ श्रीमती प्रभा जी के साथ अपने तीन दिवसीय प्रवास पर पधारे। उन्होंने पूज्य महाराजश्री, ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी जी एवं पूज्या गुरुमाँ के साथ विशेष भेंट कर योग एवं सनातन संस्कृति विस्तार पर परिचर्चा की। इस अवसर पर स्वामी लाल जी महाराज द्वारा 'ऋषि भूमि योग प्रांगण' का उदघाटन भी किया गया तथा उपस्थित गुरु भक्तों के साथ गौशाला में गौ पूजन भी किया।

गुरु से जीवन की दिशा, दृष्टि और दिव्यता

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम्।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते।।

गोस्वामी तुलसीदास जी श्रीराम चरित मानस की रचना से पूर्व गुरु की वंदना करते हुए कहते हैं कि ज्ञानमय, नित्य, शंकररूपी गुरु की मैं वन्दना करता हूं, जिनके आश्रित होने से टेढ़ा चन्द्रमा भी सर्वत्र वन्दित होता है। अर्थात् जिस तरह से द्वितीया का चन्द्रमा शिव जी का सान्निध्य पाकर अधूरा होते हुए भी पूर्ण सम्मान का अधिकारी बन जाता है उसी प्रकार एक सिद्ध-संबुद्ध गुरु की शरण में आ जाने के बाद एक साधारण इंसान भी असाधारण व्यक्तित्व का स्वामी बन जाता है। सनातन संस्कृति में गुरु का स्थान अत्यंत उच्च और पूजनीय माना गया है। माता-पिता हमें जन्म देते हैं, परंतु गुरु हमें जीवन का वास्तविक उद्देश्य बताते हैं। गुरु ही अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश प्रदान करते हैं। इसलिए हमारे शास्त्रों में गुरु को ईश्वर से भी श्रेष्ठ बताया गया है। गुरु केवल मंत्र ही नहीं देते अपितु वह शिष्य के जीवन के मार्गदर्शक, प्रेरणास्रोत और आत्मिक उद्धारक भी होते हैं।

मनुष्य का जीवन अनेक प्रकार की समस्याओं, भ्रमों और मोहमाया से घिरा रहता है, गुरु इन सबका समाधान बताते हैं तथा शिष्य को सत्य, धर्म, संयम, सेवा और भक्ति का मार्ग दिखाते हैं। गुरु शिष्य के भीतर छिपी हुई शक्तियों को पहचानकर उन्हें विकसित करते हैं। जिस प्रकार एक कुम्हार मिट्टी को सुंदर घड़े का रूप देता है, उसी प्रकार गुरु शिष्य के व्यक्तित्व को निखारता है। इसलिए मनुष्य रूप में अगर भगवान भी इस धरती पर आये तो उन्हें गुरु धारण करना पड़ा। भगवान श्रीराम ने गुरु वशिष्ठ व विश्वामित्र से शिक्षा प्राप्त की और भगवान श्रीकृष्ण ने ऋषि सांदीपनि के आश्रम में अध्ययन किया। गुरु मानव जीवन के प्रकाश स्तंभ हैं। वे शिष्य के जीवन को दिशा, दृष्टि और दिव्यता प्रदान करते हैं। गुरु के बिना ज्ञान अधूरा है, साधना अधूरी है और जीवन का उद्देश्य भी अधूरा है।

गुरुपूर्णिमा गुरु के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता व्यक्त करने का पावन पर्व है। यह पर्व स्मरण कराता है कि जीवन में जो भी श्रेष्ठ प्राप्त हुआ है, उसमें गुरु का महत्वपूर्ण योगदान है। हम सभी का सौभाग्य है कि पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज जैसे महान गुरु का शिष्य कहलाने का ईश्वर ने हमें गौरव प्रदान किया।

गुरुपूर्णिमा के पावन अवसर पर मैं आप सभी गुरुभक्तों एवं श्रद्धालुओं को 25 से 29 जुलाई, 2026 तक आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में सादर आमंत्रित करता हूं कि आप अपने परिवार, इष्टमित्रों सहित इस दिव्य आयोजन में उपस्थित होकर गुरुदेव के श्रीचरणों में अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए उनके अमृतमय प्रवचनों का लाभ प्राप्त करें। क्योंकि भक्त, भक्ति, भगवान और गुरु चार अलग-अलग नाम होते हुए भी एक ही हैं और गुरु दर्शन से इन चारों के दर्शन का लाभ मिल जाता है। गुरुपूर्णिमा पर गुरु चरणों की वंदना करने से अनेकानेक विघ्नों का विनाश होता है।

भक्त भक्ति भगवंत गुरु, चतुर नाम वपु एक।
इनके पद वंदन किएं, नासहिं विघ्न अनेक।।

प्रयास करें प्रतिदिन गुरु से जुड़े रहें। टी.वी., सत्संगों या ध्यान शिविरों के माध्यम से गुरुवर के ज्ञान को ग्रहण करें। सोशल मीडिया के विभिन्न चैनलों से जुड़ने के लिए धर्मदूत के पेज नम्बर-2 पर दिये गये सम्पर्क सूत्रों से जुड़ें।

क्रमशः ...

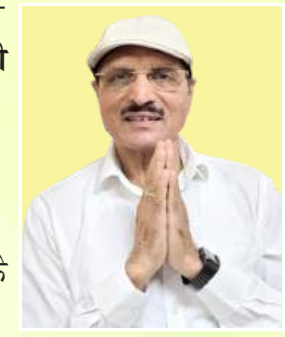

आपका अपना
देवराज कटारीया

पूर्व राष्ट्रपति कोविंद जी ने किया ऋषि भूमि प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र का लोकार्पण

मनाली, हिमाचल प्रदेश, 8 जून, 2026, भारत गणराज्य के 14वें राष्ट्रपति रहे श्री रामनाथ कोविंद जी अपनी सहधर्मिणी श्रीमती सविता कोविंद जी, सुपुत्री स्वाति कोविंद जी सहित तीन दिवसीय प्रवास पर देवभूमि हिमाचल प्रदेश पधारे और उन्होंने मनाली स्थित साधना धाम परिसर में पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज एवं डॉ अर्चिका दीदी के पावन सान्निध्य में चल रहे 'चाण्द्रायण तप एवं ध्यान साधना शिविर' सहित मिशन के विभिन्न कार्यक्रमों में सहभागिता कर महाराजश्री के साथ राष्ट्र के आध्यात्मिक उत्थान पर विशेष परिचर्चा की और साधना सभागार में उपस्थित साधकों को अपना प्रेरणादायी मार्गदर्शन भी प्रदान किया।

उल्लेखनीय है कि महाराजश्री की उपस्थिति में पूर्व राष्ट्रपति महोदय ने साधना धाम परिसर में स्थित ''ऋषि भूमि प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र'' का अपने कर कमलों से लोकार्पण भी किया। साथ ही सपरिवार गुरुवर के सानिध्य में बैठकर श्रद्धाभावना सहित परिसर में आयोजित ''पांच कुण्डीय महायज्ञ'' में सहभागी होकर यज्ञाहुतियां समर्पित कीं। इसी क्रम में पूज्यवर ने उन्हें विश्व जागृति मिशन की ऐतिहासिक यात्रा एवं विस्तार पर तैयार की गयी ''दिव्य प्रदर्शनी'' का अवलोकन भी कराया। श्री कोविन्द जी और उनके परिवार ने पूज्य महाराज श्री एवं मिशन द्वारा धर्म-समाज व राष्ट्र के लिए किये जा रहे सेवाकार्यों की मुक्तकंठ से प्रशंसा की।

शिष्यों का सौभाग्य है जो उन्हें ऐसे महान गुरु का सान्निध्य मिला

- पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद

इस सम्पूर्ण मिशन अभियान की सफलता पूज्य महाराजश्री की सादगी, सरलता, जन-जन के प्रति इनकी करुणा भरी कृपा दृष्टि एवं तप-साधनामय जीवन शैली में समाहित है। तभी तो यह मिशन अनाथ से लेकर झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले बच्चों के जीवन को गढ़ने के अतिरिक्त गुरुकुल शिक्षा सेवा, वृद्धाश्रम सेवा, देवालय सेवा, सत्संग-संस्कृति सेवा, गौसेवा आदि अनेक प्रकल्पों का संचालन करने में सफल है। पूज्य महाराजश्री ऐसे महापुरुष हैं, जिनकी इस युग को जरूरत है और इनके शिष्यों का सौभाग्य है कि ऐसे महान गुरु का उन्हें सानिध्य मिल रहा है।

धर्मादा सेवा से दानदाता की यश-कीर्ति और धन-समृद्धि में वृद्धि

धर्म कार्यों को बढ़ाने के लिए किया जाने वाला दान-सहयोग धर्मादा है। पुण्य कार्यों में दान करने से न केवल दानदाता के धन की शुद्धि होती है अपितु यश-कीर्ति भी मिलती है और धन-समृद्धि की वृद्धि भी होती है। प्राचीन समय में हर व्यक्ति अपनी कमाई में से दसवां भाग ऐसे कार्यों में दान पुण्य करता था। इससे व्यक्ति की आय चाहे भले ही कम रही हो, लेकिन उसकी कमाई में बरकत बनी रहती थी। समय बदला और लोगों की आय भी बढ़ी लेकिन वे धीरे-धीरे दान-पुण्य करना भूलने लगे जिससे उनकी आय में बढ़ोत्तरी होने के बाद भी बरकत में कमी होने लगी। लोगों की आय भी बढ़े और बरकत भी बनी रहे इस उद्देश्य से पूज्य गुरुदेव जी महाराज ने विश्व जागृति मिशन द्वारा भक्तों के कल्याण के लिए धर्मादा सेवाएं प्रारम्भ करवाई हैं। मिशन अनाथाश्रम, गुरुकुल, योगा स्कूल, वृद्धाश्रम, धर्मार्थ अस्पताल, गौशालाएं, भण्डारे, आश्रम एवं मंदिर निर्माण, यज्ञ, सत्संग एवं साधना शिविर तथा दैवीय आपदाओं में सेवा-सहयोग भी करता है। आप इन सेवाकार्यों में दान-पुण्य कर अपने घर-परिवार में सुख-शांति और नौकरी-व्यापार में उन्नति-प्रगति का वरदान पायें।

यदि आप अभी तक धर्मादा सदस्य नहीं बने हैं और विश्व जागृति मिशन द्वारा चलाये जा रहे सेवा प्रकल्पों से संतुष्ट हैं तो श्री जी.सी. जोशी, दूरभाष-09311534556 पर सम्पर्क करें।

एक सुविधा यह भी

विश्व जागृति मिशन द्वारा संचालित विभिन्न सेवाप्रकल्पों के लिए दान आप पे.टी.एम. एवं अन्य यू.पी.आई. ऐप द्वारा भी कर सकते हैं।

Paytm UPI Accepted Here

भुगतान करने के पश्चात श्री जी.सी. जोशी जी के वाट्सऐप नं॰ 93115 34556 पर अवश्य सूचित करें।

आपके द्वारा दिया गया सहयोग आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है।

भुगतान करने के लिए पे.टी.एम. या किसी भी अन्य यू.पी.आई. भुगतान ऐप में QRcode को स्कैन करें

तपः परं कृतयुगे त्रेतायां ज्ञानमुच्यते।
द्वापरे यज्ञमेवाहुर्दानमेवं कलौ युगे।।

सतयुग में तप श्रेष्ठ था, त्रेतायुग में ज्ञान, द्वापर में यज्ञ और कलयुग में दान को सबसे श्रेष्ठ धर्म कहा गया है।

मिशन द्वारा संचालित सेवा प्रकल्प

आनंदधाम में सम्पन्न हुई दो सत्रीय 'सनातन संस्कृति संस्कार' कार्यशाला

आनंद धाम आश्रम, नई दिल्ली, 1 से 5 जून व 8 से 12 जून, 2026, पूज्य गुरुदेव एवं डॉ. अर्चिका दीदी जी की प्रेरणा से आयोजित पंचदिवसीय दो सत्रीय 'सनातन संस्कृति एवं संस्कार कार्यशाला' बच्चों के लिए अत्यधिक प्रेरणात्मक रही। इस कार्यशाला के प्रथम शिविर में स्थानीय पब्लिक स्कूलों के लगभग 38 छात्र-छात्राएं अपने शिक्षकों के साथ एवं द्वितीय शिविर में श्री लाल कान्वेंट स्कूल के 48 छात्र-छात्राएं सहभागी रहे। 5 अध्यापिकाओं के नेतृत्व में आये हुए बच्चों को आनंद धाम तीर्थ स्थित पवित्र क्षेत्रों, देव स्थलों, सेवा प्रकल्पों के अतिरिक्त आश्रम की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराया गया। योग एवं स्वास्थ्य में उन्हें हँसते-मुस्कुराते सूर्य नमस्कार, विभिन्न योग क्रियाओं व स्वास्थ्यवर्धक गतिविधियों से परिचित कराया गया। इन सभी प्रयोगों से बच्चों में शारीरिक स्फूर्ति, अनुशासन देखने को मिला। बच्चों में परिवार, माता-पिता के सम्मान के भाव जगाये गये। विशेष यह कि इस कार्यशाला में बच्चों की रुचियों पर विशेष दृष्टि रखी गयी। रुचि के अनुरूप पौष्टिक अल्पाहार, फल एवं जल/छाछ पाकर सभी बहुत प्रसन्न दिखे। शिविर के हर प्रयोग से बच्चों में उत्साह, अनुशासन, जिज्ञासा एवं सक्रिय सहभागिता भाव उभरते रहे। उन्हें मंदिरों में पूजन, यज्ञ, योग एवं संस्कार से जोड़ा गया, वृक्षारोपण का अवसर दिया गया। बच्चों के माता-पिता तथा उनके टीचर्स को सम्मानित किया गया। अन्त में छात्रों को सर्टिफिकेट वितरण के साथ सनातन संस्कृति संस्कार कार्यशाला का समापन हुआ। ●

मनाली एवं चण्डीगढ़ में मिशन के बाल संस्कार केन्द्र का शुभारम्भ

मनाली। दिनांक 7 जून 2026 को पूज्य गुरुदेव सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी जी की प्रेरणा से 108 बाल संस्कार केंद्रों की स्थापना के क्रम में विद्या देवी आवासीय परिसर, घुड़दौड़, आनंदवर्धन रिसोर्ट के समीप मनाली (हिमाचल प्रदेश) में नवीन बाल संस्कार केंद्र का शुभारंभ सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में लगभग 27 बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। भविष्य में इस केंद्र में भी मिशन द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार नियमित रूप से संस्कार एवं नैतिक शिक्षा प्रदान की जाएगी।

इसी क्रम में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून 2026) के पावन अवसर पर सनातन धर्म मंदिर, सेक्टर-46, चंडीगढ़ में द्वितीय बाल संस्कार केंद्र का शुभारंभ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस केन्द्र में 20 से अधिक बच्चों ने अपने अभिभावकों सहित उत्साहपूर्वक सहभागिता की। यह बाल संस्कार केंद्र प्रत्येक रविवार को नियमित रूप से संचालित किया जाएगा, जहाँ बच्चों के सर्वांगीण विकास एवं भारतीय संस्कृति के संवर्धन हेतु विविध गतिविधियाँ आयोजित की जाएँगी। इस कार्यक्रम के सफल शुभारंभ एवं संचालन में बाल संस्कार केन्द्र टीम आनंदधाम आश्रम के अधिकारी श्री जे. एल. रस्तोगी जी एवं श्री अनिल मित्तल जी एवं टीम के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं का सराहनीय योगदान रहा। ●

गुरु से बढ़कर कोई अन्य रिश्ता नहीं

भगवान शिव गुरु गीता में माता पार्वती से कहते हैं कि शिष्य के हर अंधेरे को तोड़ने के लिए उसके अंदर के तेज को जागृत करने का सशक्त माध्यम है गुरु। गुरु द्वार है उसके माध्यम से परमात्मा तक पहुंचो लेकिन अगर गुरु कहे कि आगे जाने की कोई जरूरत नहीं क्योंकि 'गुरु' ही ब्रह्मा, विष्णु और शंकर हैं तो ये गलत है, सच यह है कि गुरु के अंदर ब्रह्मा, विष्णु और भगवान शंकर की शक्तियां हो सकती हैं, वे ब्रह्मा, विष्णु और महेश के प्रतिनिधि हो सकते हैं, वे द्वार हैं उनसे होकर ब्रह्म तक पहुंचा जा सकता है इसलिए 'परमगुरु' का ध्यान करके गुरु की आरती करना।

भगवान कहते हैं–अगर आपके सामने विकट स्थिति उत्पन्न हो जाय तो हर सगा-संबंधी साथ छोड़ने लगता है। परमात्मा भी तुमसे दूर है वह भी नहीं दिखाई देता लेकिन इस धरती पर भगवान का प्रतिनिधि सद्गुरु तुम्हारा साथ नहीं छोड़ता। इसलिए सभी रिश्तों से बड़ा गुरु का रिश्ता है। गुरु विधि देता है, विधान देता है मंत्र देता है, शक्ति देता है, जाप का तरीका बताता आशीर्वाद देता है, हमारे मंगल कार्य के लिए परमेश्वर से प्रार्थना भी करता है। भगवान रुठ जाय तो उनसे बचने के लिए गुरु हैं लेकिन गुरु रुठ जायं तो बचाने के लिए कोई नहीं आता है। इसलिए अगर आपने गुरु को प्राप्त कर लिया है तो उसे छोड़ना नहीं, उसी को मानना, उसी की बतायी विधि को अपनाना, उसको प्रसन्न करने की सदा कोशिश करना क्योंकि प्रसन्न गुरु ही परमात्मा के दर तक पहुंचने का रास्ता बताते हैं। ●

सद्गुरु से मिलता है सत्-असत् का ज्ञान

सद्गुरु मिला तो सब मिला, ना तो मिला न कोय।
मात-पिता सुत बान्धवा, यह तो घर-घर होय।।

जिसने सच्चा गुरु पा लिया, उसने मानो सारा संसार पा लिया। माता-पिता, बच्चे और दोस्त तो सभी के होते हैं, लेकिन सद्गुरु सौभाग्य से मिलते हैं।

गुरुपूर्णिमा अवसर है अपने जीवन में हुई सभी भूलों के लिए त्रुटियों के लिए भगवान से, सद्गुरु से, क्षमायाचना करें, शक्ति की, कृपा की याचना करें। जैसे हमें अनुष्ठान से पूर्व पवित्रीकरण कराया जाता है। भगवान की प्रार्थना, संकल्प कराया जाता है उसी प्रकार अपने मन को पवित्र करते हुए संकल्प करें। किसी नियम को धारण करने का संकल्प करें।

सद्गुरु जो शिष्यों का लोक परलोक सुधारते हैं, जो जीवन को एक दिव्यरूप में गढ़ते हैं उस गुरुसत्ता को पूरी निष्ठा से वंदन करें। गुरुकृपा से जीवन में हर प्रकार से समृद्धि प्राप्त होती है। मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। गुरुकृपा से उस परमसत्ता की झांकी हृदय में दिखाई देती है। सद्गुरु के बिना ज्ञान प्राप्ति संभव नहीं है। दोषों का उन्मूलन संभव नहीं है। सत्य का दर्शन सद्गुरु ही कराता है। जगह-जगह भटकते इस मन की बांधने की कला सद्गुरु देते हैं। सत्-असत् का विवेक गुरु के द्वारा होता है।

कार्यालय : आनन्दधाम आश्रम, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-110041
दूरभाष : 9560792792, 9582954200
ई-मेल : annapurna@vishwajagritimission.org
वेबसाइट : www.vishwajagritimission.org

अपने स्वयं व अपनों के जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ व पूर्वजों की पुण्यस्मृति में अन्नपूर्णा योजना के अन्तर्गत यजमानों द्वारा आनन्दधाम आश्रम के गुरुकुल, वृद्धाश्रम में भोजन करवाया जाता है तथा गऊओं के लिए गौग्रास भी दिया जाता है। इस अवसर पर यजमानों के लिए मंगलकामना करते हुए आचार्यों एवं ऋषिकुमारों द्वारा प्रार्थना और यज्ञ भी किया जाता है।

इस योजना की सहयोग राशि आप सीधे बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं–

"VISHWA JAGRITI MISSION" का
A/c No. 916010029741912 Axis Bank,
East Punjabi Bagh, New Delhi-110026,
IFS CODE - UTIB0002497.

www.vishwajagritimission.org
आनन्दधाम आश्रम, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-110041

राशि जमा कराने के उपरान्त उसकी सूचना हमें ई-मेल : annapurna@vishwajagritimission.org व्हाट्सऐप नम्बर : 9582954200, 9560792792 पर अवश्य भेजें,ताकि जमा की गई राशि की रसीद आपको भेजी जा सके।

एक से अधिक तिथियाँ आरक्षित कराने के लिए उपरोक्त ई-मेल आई.डी. पर सूचित करें।
(आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है)

गुरु के शक्तिपात से शिष्य के जीवन का रूपांतरण

एक तपोनिष्ठ सिद्ध गुरु द्वारा अपने तपोबल से प्राप्त सिद्धियों-शक्तियों को दिव्य स्पर्श के माध्यम से शिष्य के अंदर उन सिद्धियों और शक्तियों को प्रेषित करना दिव्य शक्तिपात क्रिया है। इस क्रिया से शिष्य के जीवन में वैसा ही रूपानतरण आता है जैसे संत तुलसी ने कहा है-**पारस के स्पर्श से कंचन भई तलवार। तुलसी तीनों मिट गये धार, मार आकार।**

शक्तिपात क्रिया से गुरु अपनी आंतरिक शक्ति सामर्थ्य से शिष्य में शक्ति का संचार कर देते हैं और उसके अंदर की आंतरिक कुंडलनी शक्ति को जागृत कर देते हैं। सिद्ध गुरु के शक्तिपात से जागृत हुई कुंडलिनी साधक को योग मार्ग से मोक्ष तक की यात्रा कराती हैं सामान्य मनुष्य में भी यह कुंडलिनी सुप्त अवस्था में होती लेकिन जब साधक शक्तिपात प्राप्त करता है, है तो उसकी कुंडलिनी क्रियाशील हो जाती है। जागृत कुंडलिनी के प्रभाव से साधक में योग अपने आप घटित होने लगता है। उसके अंदर गुरुमंत्र चलने लगता है। मंत्र अजपा जप हो जाता हैं। अपने आप प्रणव का जाप होने लगता है। अनेक प्रकार के मंत्र प्रस्फुटित होने लगते हैं। ध्यान का नशा चढ़ जाता है। मस्ती छा जाती है। देवताओं के दर्शन होने लगते हैं दिव्य गंध, रूप, रस, शब्द, स्पर्श के अनुभव होते हैं। मन एकाग्रह होने लगता है। दिव्य शक्तियों से वार्तालाप होता है। अनेक प्रकार के प्रकाश दिखाई देते हैं। भूत, भविष्य और वर्तमान कई बातों का ज्ञान होने लगता है। भृकुटी में दृष्टि स्थिर हो जाती है और दृष्टि में दिव्यता आ जाती है। शक्तिपात क्रिया शिष्य के तन-मन और जीवन चमत्कारिक रूपांतरण हो जाता है। ●

कामधेनु गौशाला

गौ माता के संरक्षण और संवर्द्धन हेतु दान देकर पुण्य के भागीदार बनें।

कृपया गौशाला में दान देने के लिए आप अपनी सहयोग राशि ''विश्व जागृति मिशन-गौशाला'' के एक्सिस बैंक लिमिटेड, A-11, विशाल एनक्लेव, राजौरी गार्डन गार्डन, नई दिल्ली - 110027 के खाता संख्या -910010001264246, IFSC Code - UTIB0000066 में सीधे जमा करवा सकते हैं, इसकी सूचना आप श्री सतीश शर्मा-मो०-9310278078 पर अवश्य भेजें ताकि जमा राशि की रसीद बनाकर आपको प्रेषित कर सकें।

Paytm UPI
Accepted Here
भुगतान करने के लिए पे.टी.एम. या किसी भी अन्य यू.पी.आई. भुगतान ऐप में QRcode को स्कैन करें

आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा 80-G के अंतर्गत कर मुक्त है।

सुंदर नगर, हिमाचल प्रदेश में चार दिवसीय दिव्य भक्ति सत्संग सम्पन्न

जीवन में प्रेम, प्रसन्नता और सफलता के लिए आलस्य को जीतें -सुधांशु जी महाराज

सुंदरनगर (हि.प्र.)। आलस्य व्यक्ति का सबसे बड़ा दुश्मन है। आप अपने जीवन में योग और प्राणायाम को शामिल करके शारीरिक और मानसिक रूप से सक्रिय बने रहने का संकल्प करें। जब आप अपने आलस्य पर नियंत्रण पा लेते हैं, तब प्रगति के बंद रास्ते स्वयं ही खुल जाते हैं और जीवन में प्रेम और प्रसन्नता का आधार बन जाता है। व्यक्ति अपने काम के बोझ से इतना दब जाता है कि वह हंसना और मुस्कुराना भी भूल जाता है। जीवन में प्रेम, शांति और सच्ची प्रसन्नता आए, उसके लिए सबसे पहले अपनी व्यस्तता पर ब्रेक लगाना सीखें और आलस्य को जीतें।

उपरोक्त उद्बोधन पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज ने विश्व जागृति मिशन सुंदर नगर मण्डल द्वारा आयोजित सत्संग में भक्तों को सम्बोधित करते हुए दिए। ज्ञात हो कि 11 से 14 जून, 2026 तक आयोजित इस चार दिवसीय सत्संग का शुभारम्भ भव्य शोभायात्रा से हुआ। सत्संग के अवसर पर मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम रखा गया जिसमें सैकड़ों भक्तों ने पूज्य गुरुवर से मंत्र दीक्षा लेकर अपने जीवन को

सकारात्मक दिशा देने का संकल्प लिया। मंडल के प्रधान श्री प्यारे लाल गुप्ता जी के नेतृत्व में सभी पदाधिकारियों, सेवादारों व कार्यकर्ताओं के सहयोग से यह कार्यक्रम अति सफल रहा। ●

हरिद्वार में संतों द्वारा गौमाता को राष्ट्रमाता बनाने की अनुगूंज

हरिद्वार। 18 जून, 2026, निष्काम सेवा ट्रस्ट हरिद्वार द्वारा हरिद्वार में गौमाता को राष्ट्रमाता का दर्जा दिलाने के लिए संत सम्मेलन आयोजित किया गया। इस अवसर पर सम्मेलन में पधारकर पूज्य गुरुवर श्री सुधांशु जी महाराज ने अपनी ओजस्वी वाणी में गौमाता की महिमा बताते हुए गौमाता को राष्ट्रमाता के पद पर प्रतिष्ठित करवाने का आह्वान किया, जिसका वहां उपस्थित संतजनों व गौभक्तों ने एकस्वर में समर्थन किया। ●

देवभूमि उत्तराखण्ड के हरिद्वार-ऋषिकेश में संत मिलन

हरिद्वार। 18 जून, 2026, सनातन संस्कृति में संतों का स्थान अत्यंत ऊंचा माना यगा है। संत केवल एक व्यक्ति नहीं अपितु ईश्वर के प्रेम, ज्ञान, करुणा और सदाचार के जीवंत स्वरूप होते हैं। उनके दर्शन और मिलन से मनुष्य के जीवन में आध्यात्मिक जागृति आती है। विगत दिनों देसभूमि उत्तराखण्ड के तीर्थ हरिद्वार और ऋषिकेश में पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज के साथ विश्व प्रसिद्ध संतों से मिलन की कुछ झलकियां। ●

गुरुवर ने दी योगी लाल जी महाराज को जन्मोत्सव की शुभकामनाएं

पूज्य योगी लाल जी महाराज के पावन जन्मोत्सव के मांगलिक अवसर पर परम श्रद्धेय श्री सुधांशु जी महाराज ने उन्हें आत्मीय बधाई व अनंत शुभकामनाएं प्रेषित की। इस शुभ अवसर पर पूज्य महाराजश्री ने उन्हें पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्र भेंट कर उनका भावभीना अभिनंदन किया। गुरुवर ने योगी लाल जी महाराज को उनके दीर्घायु व उत्तम स्वास्थ्य की मंगल कामना की। ●

गुरुवर की उपस्थिति में श्री पारदेश्वर महादेव शिवलिंग का लोकार्पण

हरिद्वार। 17 जून, 2026, शिरडी साईं समर्थ ट्रस्ट द्वारा देवभूमि उत्तराखंड की राजधानी हरिद्वार में श्री पारदेश्वर महादेव शिवलिंग की स्थापना एवं प्राण-प्रतिष्ठा करवाई गई, जिसका लोकार्पण विश्व जागृति मिशन के संस्थापक पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज की पावन उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम में पधारे संतगण पूज्य महाराजश्री से भेंट वार्ता कर अति हर्षित हुए। ●

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आनंदधाम आश्रम में योग शिविर सम्पन्न

रील नहीं, रियल हीरो बनने के लिए योग अपनाएं–सुधांशु जी महाराज

आनन्दधाम, नई दिल्ली, 21 जून। स्वस्थ जीवन के लिए योग अति आवश्यक है। हमारे ऋषियों ने योग के माध्यम से सभी के लिए **'सर्वे सन्तु निरामया:'** की प्रार्थना की है। यदि आप बुढ़ापे को दूर करना चाहते हैं और युवा जीवन जीना चाहते हैं तो आपको योग अपनाना पड़ेगा। आज पूरे विश्व में योग को आरोग्य दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। आप अपने जीवन में रील के हीरो नहीं, अपितु रियल हीरो बनें। उपरोक्त उद्बोधन 21 जून, 2026 को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विश्व जागृति मिशन इंटरनेशनल योग स्कूल द्वारा आयोजित आनंदधाम आश्रम के योग शिविर में पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज ने दिये। उल्लेखनीय है कि योग दिवस पर आनंदधाम आश्रम में आये योग प्रेमी भक्तों को योगाचार्य अनुराग शर्मा द्वारा कई तरह के योगासन भी सिखाये गये।

इस अवसर पर वीडियो के माध्यम से ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी ने आये हुए योग साधकों को योग का महत्व बताते हुए कहा–जीवन को सही ढंग से जीने का तरीका योग से मिलता है। योग का मतलब है जुड़ना और हमें जुड़ना है उस परम शक्ति से जो सारे संसार को जीवन देती है। योग सिर्फ शारीरिक व्यायाम ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जीवन दर्शन है। योग से शरीर में हैपी हार्मोंस उपजते हैं। इसलिए हर एक व्यक्ति को योग को अपने जीवन चर्या का अंग बनाना चाहिए।

इस योग शिविर में डॉ. नरेन्द्र मदान जी ने विश्व जागृति मिशन इंटरनेशनल योग स्कूल द्वारा योग के क्षेत्र में किए जा रहे प्रशंसनीय कार्यों के विषय में जानकारी दी। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में मिशन के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं का सराहनीय योगदान रहा। ●

विश्व जागृति मिशन (रजि०) के लिए श्री देवराज कटारीया द्वारा समाचार पत्र "**धर्मदूत**" ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, 'जी' ब्लॉक, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली-110015 से प्रकाशित एवं सीता फाईन आर्ट्स प्रा० लि०, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित। सम्पादक : डॉ. नरेन्द्र मदान